कालिया मर्दन

गोकुल में स्पष्ट परिवर्तन आया था। कुछ काल पहले तक उदास दिखने वाले मुखों पर अब उमंग और उत्साह दिखाई देते थे। बालक अब सर्वत्र किलकारियाँ करते, आनंद पूर्वक गायें चराते और भाँति - भाँति की क्रीड़ाएँ करते थे। वृक्ष हरे-भरे हो गए थे और पशु भी प्रसन्न हो कर अठखेलियाँ करते प्रतीत होते थे। इस परिवर्तन को लाने वाला और कोई नहीं एक छोटा सा बालक था, नन्द का पुत्र, कृष्ण। नटखट, सुन्दर, सलोना, सब का प्यारा कृष्ण। उस के मुख पर एक अलौकिक मुस्कान थी जो निराशा को धो डालती थी। उस का हर कार्य आशा और आनन्द को जन्म देने वाला था। जिधर वह चलता था सभी उस ओर सम्मोहित से हो कर चल पड़ते थे। जैसा वह कहता था बिना भला बुरा विचारे वैसा ही करने को तत्पर हो जाते थे।

वह समय बहुत ही बुरा था। दुष्ट कंस के राज्य में न्याय, सत्य और धर्म के लिए कोई स्थान न था। कंसके चाटुकार मनमाने अत्याचार करते थे। अवैध व्यापारी राजनैतिक संरक्षण में खूब फल-फूल रहे थे। इन्हीं में से एक था कालिया। वह कुछ विशेष प्रकार की जड़ी बूटियाँ बनाया करता था जिनके सेवन से मनुष्य को उन्माद हो जाता था। यह उन्माद सुरापान से भिन्न होता था।

प्रारंभ में कुछ मनचले युवक केवल जिज्ञासा वश ऐसे पदार्थों का सेवन कर लिया करते थे। शीघ्र ही उन्हें इन मादक पदार्थों की लत हो जाती थी और इन के न मिलने पर शरीर में भयंकर छटपटाहट होती थी। ऐसी स्थिति में वे अधिक से अधिक मूल्य दे कर भी उन मादक पदार्थों को खरीदने पर विवश हो जाते थे। एक बार उस जाल में फँस जाने वाले का सर्वनाश लगभग निश्चित था। कालिया की इन विष बूटियों की मदद से कंस ने बहुत से शक्तिशाली राक्षसों को वश में कर रखा था। इस कारण से कालिया कंस का विशेष कृपा पात्र था।

गोकुल के समीप यमुना का पाट बहुत विस्तृत था। नदी के पार के भूभाग पर कालिया ने अपना महल और रसायन शाला बनाए थे। उस विष के कारण वहाँ का जल बहुत विषैला हो गया था। उस प्रदूषित जल को पी कर अनेक पशु काल का ग्रास बन चुके थे। गोकुल वासी घृणा वश कालिया को कालिया नाग और यमुना के उस भाग को काली दह कहते थे।

एक कालिया ही नहीं, और भी अनेक असामाजिक तत्व मथुरा के ग्रामीण अंचलों में रहने वाले सरल हृदय और भीरु प्रकृति के लोगों को विभिन्न प्रकार से उत्पीड़ित करते थे। प्रशासनिक अधिकारी व न्यायपालिका के लोग भी उनका अत्यधिक शोषण करते थे। लेकिन प्रतिकार करने का साहस उन ग्वाल बालों में न था।

कृष्ण अल्पायु से ही यह सब देख रहे थे। उन्होंने व्यथित और निराश होना नहीं सीखा था। वह समझते थे कि संगठित हुए बिना वह संघर्ष नहीं कर सकते। लेकिन इन भयग्रस्त लोगों को संगठन के लिये प्रेरित करना कोई आसान कार्य न था। सामान्य लोग सामाजिक समस्याओं के प्रति उदासीन होते हैं। सभी यह चाहते हैं कि अत्याचार का विरोध तो हो लेकिन उससे उनके ऊपर कोई संकट न आए। वे यह भी चाहते हैं कि उनको मिलने वाली सुविधाओं में कोई कमी न आए और अन्य लोग आगे बढ़ कर संघर्ष करें।

बहुत विचार कर के कृष्ण ने खेल- खेल में उन्हें संगठित करने की विधि निकाली। उन्होनें दैनिक खेल-कूद का आयोजन करना आरम्भ किया। विशेष कर कृष्ण का ध्यान उन खेलों पर था जिन से व्यक्ति जुझारू बन सके, जैसे - रस्सा कसी, कबड्डी, मल्लयुद्ध (कुश्ती), दंड युद्ध (लाठी), चाबुक

युद्ध इत्यादि। खेल के पश्चात सब ग्वाल बाल घेरा बना कर बैठते और तब कृष्ण का बातों का पिटारा खुलता। राम लक्ष्मण द्वारा बाल्यकाल में ताड़का और सुबाहु का वध, फिर जनजातियों का संगठन कर के रावण का संहार, परशुराम द्वारा सहस्त्र बाहु का वध, देवासुर संग्राम इत्यादि। इन वीर गाथाओं के बाद कृष्ण उन्हें वर्तमान में ले आते व उस समय व्याप्त समस्याओं से उन्हें अवगत कराते ।

कृष्ण की चपलता और शारीरिक क्षमता अद्भुत थीं। उन्होंने मल्लयुद्ध के नए - नए दाँव पेंच विकसित किए थे। दंड, चाबुक और गुलेल जैसे छोटे - छोटे अस्त्रों के प्रयोग में उन्होंने अत्यधिक सिद्धहस्तता प्राप्त की थी। बलराम जी हल को शस्त्र के रूप में प्रयोग करते थे। इन अस्त्रों के प्रयोग में उन्होंने शनैः शनैः अन्य बालकों को भी पारंगत बनाया।

गेंद का खेल भी बालकों को अत्यधिक प्रिय था। वे एक दूसरे के शरीर को लक्ष्य बना कर वेग से गेंद फेंकते थे और वार को बचाते थे। कहने को ये सभी खेल बड़े सरल और सरस थे पर इस खेल - खेल में ही बालकों की शारीरिक दृढ़ता और प्रहार क्षमता बढ़ने लगी।

अब बालकों में उत्साह जागृत होने लगा। उन्होनें संगठन के महत्व को समझा। पहले जो बालक कहीं भी तनिक झगड़ा होते देख कर घरों में जा छिपते थे, वही बालक अब शौर्य पूर्वक अन्याय का प्रतिकार करने लगे थे। एक ही आवाज पर सैकड़ों बालक लाठी चाबुक इत्यादि ले कर एकत्र हो जाते थे। शोषण करने वाले अधिकारी एवं दस्यु प्रवृत्ति के लोग अब इस संगठित जनशक्ति से भय खाने लगे।

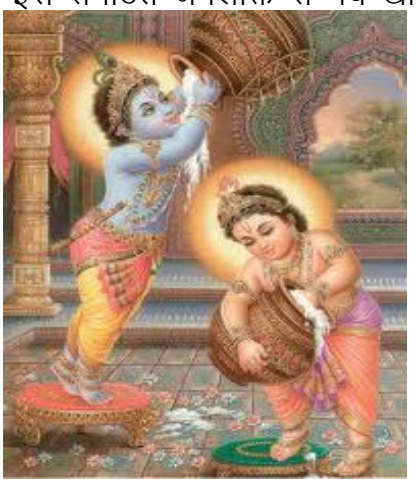

गोकुल से गोप बालाएँ दही माखन इत्यादि को बेचने के लिए मथुरा ले जाती थीं। मथुरा के व्यापारी बहुत कम मूल्य दे कर इस सब को हथिया लिया करते थे। कंस के सैनिक और प्रशासनिक अधिकारी भी सुविधा शुल्क के नाम पर इस में से बड़ा भाग हड़प लेते थे। कृष्ण ने सब को समझाया कि इस माखन को खा कर कंस के अत्याचारी सैनिक और बलिष्ठ हो जाएँगे। इस की आवश्यकता तो यहाँ के ग्वाल बालों को है। कृष्ण के नेतृत्व में ग्वाल बालों की टोली घरों से माखन चुरा कर खाने लगी। इन टोलियों ने गोकुल से बाहर जाने वाली युवतियों को रोकना आरम्भ किया। कुछ की मटकियाँ तोड़ी गईं। अंततः गोकुल से दधि माखन बाहर जाना बंद हो गया।

उस काल में कंस के पाले हुए राक्षस मनमाना भ्रमण करते थे एवं जहाँ चाहते थे वहाँ रुक कर लोगों को पीड़ित करते थे। असहाय लोग उनकी सब इच्छाओं को पूरा करते थे। ग्वाल बालों का साहस अब इतना बढ़ गया कि वे कृष्ण और बलराम के नेतृत्व में उन राक्षसों पर भी आक्रमण करने लगे। राक्षसों के लिए यह सब अप्रत्याशित एवं अकल्पनीय था। वे इतने विलासी हो चुके थे कि युद्ध करना भूल चुके थे। उन में से कुछ तो मारे गए एवं कुछ जान बचा कर कंस के पास पहुँचे। कंस ने अपने सत्ता मद में उन राक्षसों की चेतावनियों पर कोई ध्यान न दिया, बालकों से पिट कर आने पर उन्हें ही उलाहना दिया।

गोकुल के जो युवक युवतियाँ कालिया के विषैले जाल में फँस गए थे उन्हें कृष्ण एवं सखाओं ने कुछ स्नेह व कुछ कठोरता द्वारा अपने वश में किया। योग्य वैद्यों के मार्गदर्शन में उन में से अधिकांश युवक मादक द्रव्यों की लत से बाहर निकलने में सफल हो गए। इस प्रकार के युवकों ने फिर अन्य ग्वाल बालों के साथ मिल कर कालिया के दूतों को पकड़वाने का उत्तरदायित्व लिया। जो दो- तीन दुष्ट दूत इन लोगों की पकड़ में आ गए उन पर मल्ल युद्ध के दाँव - पेचों का इतना अभ्यास किया गया कि उन की हड्डी पसलियाँ एक हो गई। अन्य दूत भय के कारण यह क्षेत्र छोड़ कर भाग गए।

इन सब प्रयासों से मादक द्रव्यों की समस्या पर काफी नियन्त्रण हो गया, परन्तु इस समस्या

की जड़ तो स्वयं कालिया ही था। कृष्ण जानते थे कि समस्या का केवल सतही उपचार कर के जड़ को वहीं छोड़ देने पर समस्या के पुनः सर उठाएगी। कालिया को वहाँ से हटाया जाना बहुत आवश्यक था। पर यह कैसे सम्भव हो?

काली दह के किनारे कदंब का एक घना वृक्ष था। उस पर चढ़ कर कालिया के महल का दृश्य स्पष्ट दिखाई देता था। कृष्ण बहुधा वहाँ बैठ कर कालिया की गतिविधियों का निरीक्षण किया करते थे। कुछ दिनों में कृष्ण ने निश्चित रूप से जान लिया कि अपराह्न में कालिया के सभी दूत बाहर चले जाते थे। कालिया स्वयं भारी डील- डौल का स्वामी था व स्वभाव से विलासी एवं आलसी था।

एक दिन कृष्ण अपराह्न में दैनिक क्रीड़ा के पहले कदम्ब के वृक्ष पर चढ़ कर यमुना के उस पार कालिया के महल का निरीक्षण कर रहे थे। उन्होंने देखा कि कालिया अपने महल से बाहर निकला एवं लड़खड़ाता हुआ आ कर रेत पर लेट गया। उसकी चाल बता रही थी कि उसने किसी मादक पदार्थ का अत्यधिक सेवन कर रखा था। कृष्ण को यह अवसर उपयुक्त लगा। ग्वाल बालों के देखते - देखते कृष्ण काली दह में कूद गए। सभी ग्वाल बाल उनकी इस गतिविधि से हतप्रभ रह गए। कुछ मारे भय के वहीं खड़े रोने चिल्लाने लगे। कुछ भाग कर गोकुल पहुँचे। वहाँ जिसने भी सुना कि कृष्ण काली दह में कूद गए हैं, वही रोता पीटता भागा चला आया। माता यशोदा पछाड़ खा कर मूर्छित हो गईं। बहुत से ग्वाल बाल लाठियाँ पटक - पटक कर जल में कूदने का हठ करने लगे। वयस्क लोगों ने बड़ी कठिनाई से उन्हें रोका। उधर कृष्ण पानी के भीतर तैर कर उस तट तक जा पहुँचे थे। उनका प्रिय चाबुक उनकी कमर से लिपटा हुआ था।

कालिया उस समय जल के किनारे मखमल की शैया पर लेटा धूप सेंक रहा था। कृष्ण सीधे उसके सम्मुख जा कर खड़े हो गए और अधिकार पूर्वक उससे कहा, 'उठो कालिया! मैं नंद का पुत्र कृष्ण तुम्हारे लिए ग्राम प्रमुख का आदेश ले कर आया हूँ। तुम्हारे लिए आज्ञा है कि तुम अपना विषैला व्यापार बंद कर के अन्यत्र चले जाओ। यदि तुम शान्ति पूर्वक यहाँ से चले जाओगे तो तुम्हें और तुम्हारे परिवार को कोई हानि नहीं पहुँचाएगा।'

कालिया ने कृष्ण का नाम अपने दूतों से सुन रखा था। इधर के क्षेत्र में इस बालक के कारण उस का व्यापार नहीं चल पा रहा था ऐसा उसे ज्ञात हुआ था। कृष्ण को इस प्रकार सामने खड़ा देख कर और उन के चुनौती भरे वचन सुन कर वह बिल्कुल आग बबूला हो गया। वह त्वरित गति से उठा और लगभग फुफकारते हुए कृष्ण पर झपटा।

कृष्ण सावधान थे। झपटते हुए साँड़ों को वंचका देना व उन पर चाबुक प्रहार करना उन का प्रिय खेल था। उन्होंने उसी प्रकार एक ओर हट कर कालिया को उस के वेग में आगे निकल जाने दिया और उस की पीठ पर चाबुक से भरपूर प्रहार किया।

कालिया फूत्कार कर पलटा और पुनः कृष्ण पर झपटा। कृष्ण ने उसी प्रकार वार बचाया और फिर चाबुक से भीषण प्रहार किया। कालिया औंधे मुँह रेत में गिरा और असह्य वेदना से छटपटाया। वह समझ गया कि सामने खड़ा बालक कोई साधारण बालक नहीं है। उसकी चपलता और प्रहार शक्ति असाधारण है।

कालिया शीघ्रता से सतर्क हो कर उठने लगा। लेकिन कृष्ण अवसर चूकने वाले नहीं थे। वह उठ पाता इस से पहले ही कृष्ण ने उसके ऊपर चाबुक के भयंकर प्रहार करने आरंभ कर दिये।

कालिया वार बचाने का प्रयास कर रहा था और चाबुक को पकड़ना चाह रहा था। पर कृष्ण की क्षिप्रता अद्‌भुत थी। उनका कोई भी वार खाली नहीं जा रहा था।

कृष्ण के प्रत्येक प्रहार में इतनी शक्ति थी कि कालिया के शरीर में स्थान - स्थान पर रक्त छलक आया था। क्रोध और पीड़ा के कारण उस के मुख से भयानक फूत्कार की ध्वनियाँ निकल रही थीं और फेन गिरने लगा था। वह किसी प्रकार उठ कर कुछ दूर भागा। महल की ओर जाने वाले मार्ग को कृष्ण रोक कर खड़े थे। इस बीच कालिया की पत्नियाँ भी महल के द्वार पर आ गई थीं और इस विचित्र अकल्पनीय दृश्य को आँखें फाड़ - फाड़ कर देख रही थीं।

कालिया का मस्तिष्क कार्य नहीं कर रहा था। जीवन में पहली बार इस प्रकार के संकट से उस का सामना हुआ था। कृष्ण को चाबुक ले कर अपनी ओर बढ़ता देख कर उसे कुछ न सूझा। हड़बड़ाहट में उसने जल में छलाँग लगा दी। कृष्ण स्वयं अत्यधिक कुशल तैराक थे। कालिया के जल में कूदते ही उन्होंने चाबुक एक ओर फेंका और बिना एक पल का भी विलंब किए जल में कूद पड़े। कालिया जल की सतह पर आकर श्वास ले पाता इससे पहले ही कृष्ण जल के भीतर उस के ऊपर पहुँच गए और उस के मस्तक पर अपने पैरों से शक्तिशाली प्रहार करने आरंभ कर दिए। कालिया भली भाँति तैरना जानता था पर उस का शरीर भारी था और कृष्ण उसे सन्तुलन बनाने का अवसर ही नहीं दे रहे थे। कालिया बीच - बीच में किसी प्रकार जल की सतह पर आ कर श्वास लेता और कृष्ण पर वार करने का प्रयास करता। उस ने अनेक बार प्रयास किया कि किसी प्रकार एक बार कृष्ण को पकड़ ले और अपनी भुजाओं में पीस कर मार डाले पर कृष्ण उसकी पकड़ में ही नहीं आए। इस भयानक द्वन्द्व युद्ध के कारण काली दह का जल फेनिल हो रहा था और किनारे खड़े गोकुल वासी कुछ न दिखाई देने के कारण बहुत व्याकुल हो रहे थे।

शीघ्र ही कालिया बहुत थक गया। उस को अब जल के भीतर अपना संतुलन बनाए रखने में बहुत कठिनाई हो रही थी। कृष्ण ने अब उचित अवसर जान कर पानी में डुबा कर उसके प्राण लेने का निश्चय किया। उन्होंने अपने वक्ष में भरपूर श्वास भरा और कालिया को पकड़े - पकड़े जल में डुबकी लगाई। कालिया का श्वास बुरी तरह उखड़ चुका था जबकि कृष्ण को श्वास रोकने का बहुत अच्छा अभ्यास था।

जल के भीतर कालिया श्वास लेने के लिए छटपटाने लगा और अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा कर बाहर आने का प्रयास करने लगा। जब वह मरणासन्न हो गया तो कृष्ण उसे खींच कर जल के ऊपर ले आए। अब उसमें इतनी शक्ति नहीं रह गई थी कि वह अपने भारी शरीर का जल में संतुलन बना सके। वह समझ गया कि जल में कूद कर उसने भारी भूल कर दी है।

इधर जल की उथल पुथल शान्त होने के बाद गोकुल वासियों को भी अब सारा दृश्य स्पष्ट दिखाई देने लगा था। उत्साही युवक लाठियाँ पीट - पीट कर और चिल्ला कर कृष्ण को कालिया का वध करने के लिए उत्साहित करने लगे। कालिया को अपना अंत अब निकट दिखाई देने लगा। उसने हाथ जोड़ कर कृष्ण से विनती की, 'हे कृष्ण! दया करो, मेरे प्राण मत लो। तुम जो कहोगे वही मैं करूँगा।'

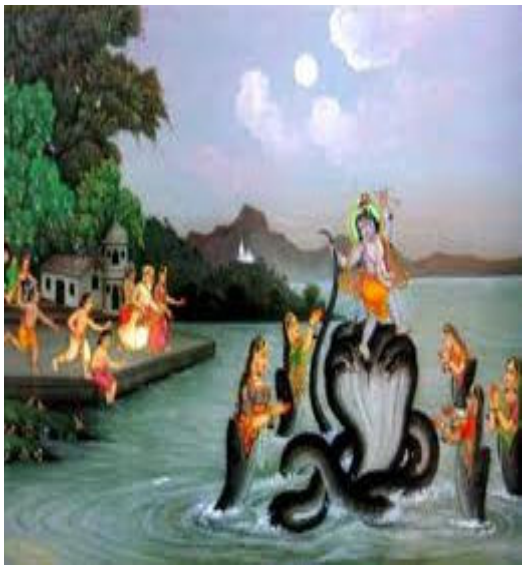

इसी बीच कालिया की कुछ पत्नियाँ भी तैर कर वहाँ पहुँच गई और कृष्ण से प्रार्थना करने लगीं कि वे उनके पति को जीवित छोड़ दें।

कृष्ण ने कुछ क्षणों तक उस परिस्थिति पर विचार किया। कालिया की पत्नियों पर उन्हें दया आयी। कालिया कितना भी दुष्ट क्यों न हो, इस समय वह और उसकी पत्नियाँ कृष्ण की शरणागत थीं। शरणागत का वध करना आर्य संस्कृति के विरुद्ध था। पर उसको एवं उसकी विष उगलने वाली रसायन शालाओं को ऐसे ही छोड़ देना भी ठीक न था। विषम परिस्थितियों में तुरन्त सटीक निर्णय लेना कृष्ण की विशेषता थी। उन्होंने कालिया की ग्रीवा को अपनी एक भुजा से इस प्रकार जकड़ लिया कि वह कोई धूर्तता न कर सके और उसकी पत्नियों को आज्ञा दी कि वे तुरंत जा कर अपने महल को आग लगा दें। कालिया की स्त्रियों के पास कृष्ण की आज्ञा मानने के अतिरिक्त कोई चारा न था। कालिया के प्राण बचाने के लिए उन्होने महल में जा कर आग लगानी आरंभ कर दी। महल के भीतर एकत्र ईंधन और रसायनों के कारण शीघ्र ही महल से गगनचुम्बी लपटें उठने लगीं।

कृष्ण इस बीच कालिया की ग्रीवा को उसी प्रकार जकड़े रहे। उनकी सहायता के लिए तब तक बहुत से ग्वाल बाल तैर कर वहाँ आ गए थे। जब कालिया का महल पूर्ण रूप से अग्नि की लपटों से घिर गया तो कृष्ण ने कालिया को छोड़ दिया और उससे कहा, 'जाओ कालिया, अब तुम मथुरा की सीमा के भीतर कभी न आना। अपने शेष जीवन को किसी सेवा कार्य में लगाना तभी तुम्हारा उद्धार होगा।' कालिया अपनी पत्नियों के साथ नतमस्तक हो कर वहाँ से चला गया।

उस रात्रि कालिन्दी के तट पर विजयोत्सव मनाया गया। कालिया जैसे दुर्दांत दस्यु पर विजय पाने वाले कृष्ण इस समय आनंद मग्न हो मुरली बजा रहे थे। अधर्म एवं अन्याय से संघर्ष के साथ -साथ यदि जीवन में रस एवं आनंद भी हो तभी जीवन की पूर्णता है ऐसा उनका विश्वास था।

' इति '